सुख, समृद्धि लायेंगी लक्ष्मी चरण पादुकाएं

सामान्यतः कहा जाता है कि घर में बहू का पगफेरा ऐसा हुआ कि मानो लक्ष्मी आ गई हो। सभी तरह की सुख-संपदा का वास हो गया हो। इसी के विपरीत परिणाम मिलने पर अशुभ लक्षणों की बात कही जाती है। कहने का तात्पर्य है कि नववधू का अपने ससुराल में प्रवेश को पग फेरा से जोड़ा जाता है। उसके चरणों का उस घर में प्रवेश जहां घर में लक्ष्मी का वास ला सकता है, वहीं अगर उसमें कुसंस्कार है और वो सबसे मिल जुलकर नहीं रहकर अपने तक सीमित रहना चाहती है, तो एक हंसते खेलते परिवार में टूटन भी ला सकती है।

शादी के बाद वधू का प्रवेश जब घर में होता है, तब भी वो अपनी पैर की ठोकर से प्रवेश द्वार पर रखे अन्नयुक्त पात्र को बिखेरते हुए प्रवेश करती है। यहां भी उसके चरणों को समृद्धि के आधार पर देखा जाता है। इसका अर्थ यह लिया जाता है कि उसके प्रवेश से घर में खाद्यानों की कोई कमी नहीं रहेगी।

इससे पूर्व शादी के मण्डप में भी सात पात्रों में खाद्यान्नों को रखकर भंवरी के रूप में रखा जाता है। उसको भी वो ठोकर मारती हुई आगे बढ़ती है। यह सब परम्परा वधू के चरणों से संबंधित है।

भारतीय परम्परा में सात का अंक पूर्णता का प्रतीक माना जाता है। सात कदम साथ चलने से तात्पर्य है जीवन भर साथ-साथ चलना यानि हर परिस्थिति में सहमति रखते हुए सहयोग करते हुए चलना। चावल की ढेरियों पर कदम रखने के पीछे मान्यता है कि वे जहां भी कदम रखें, यानि जीवन के हर क्षेत्र में धन-धान्य, सुख-समृद्धि रहे। जीवन के हर पग पर (हर कार्य-क्षेत्र में) वचनों, कर्त्तव्यों का पालन करते हुए जीवन-यज्ञ में आहुति देते रहे, पारिवारिक सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए विश्व कल्याण की मूल भावना को प्रसारित करें। वधू के द्वारा ससुराल में रखे गए पहले कदम की सिंदूर, आलता या महावर अथवा मेंहदी की छाप (अलग-अलग प्रांतों में भिन्न तरीके से) लेने के पीछे भी यही मान्यता है कि घर में लक्ष्मी आई है। इसके पीछे बहू के प्रति अप्रत्यक्ष सम्मान भाव भी है, तो घर की सुख-समृद्धि बनी रहने की कामना भी है।

जब भी विवाह होने पर वधु घर आती है तो कुंकुम के पाँव करवाये जाते है क्योंकि वधु को साक्षात् लक्ष्मी माना जाता है।

गाँवों में आज भी घर लिपने-पोतने के पश्चात् पादुका बनाने का रिवाज है।

ऋषि-महर्षि, महात्मा लोगों की पादुकाएँ आदि की पूजा की जाती है। नासिक में श्रीसांई बाबा के चरणों की पूजा होती है। कई मंदिरों में पत्थर की शिलाओं पर चरण बने होते हैं, वहाँ पर लोग माथा लगाते हैं।

चरण पादुका प्रयोग-

आप भी इस दीपावली पर्व पर लक्ष्मी चरण के रुप में पंच धातु की पादुकाएँ घर में चाहे पूजा में अथवा लाल कपड़े में बांध कर अपने संदूक आदि में स्थापित करें।

दीपावली की रात्रि को जब आप महालक्ष्मी की पूजा सम्पन्न करें, उस समय 'लक्ष्मी चरण' पादुका को भी लक्ष्मी चित्र अथवा प्रतिमा के पास स्थापित करके उसकी पूजा करें। उसके पश्चात् उसे वहीं छोड़ दें तथा दूसरे दिन चरण पादुकाएं लेकर अपने घर के लॉकर या संदूक में स्थापित करें। इससे वर्षपर्यन्त आपके घर में लक्ष्मी की कृपा बनी रहेगी।

दीपावली की रात्रि में लक्ष्मी चरण पादुका, सात लक्ष्मीकारक कौड़ियां तथा सात गोमती चक्रों का भी पूजन करें तथा लाल कपड़े की पोटली बनाकर अपने गहनों के साथ में रखने से लक्ष्मी प्रसन्न होकर कृपा करती है।

धन त्रयोदशी के दिन चांदी, पारद, पंचधातु की लक्ष्मी चरण पादुकाएं खरीद कर लाये या पहले से प्राप्त करके, उस दिन पूजा अवश्य करें। सांयकाल में सूर्यास्त के पश्चात् कुंकुम केशर से पूजन कर, अपने गहनों के साथ रख दें। इससे धन-सम्पत्ति की वृद्धि होती रहेगी।

न्यौछावर राशि- 750/- से प्रारंभ

♦♦♦